

डिजिटल युग में पारंपरिक कला के स्वरूप

मनीषा अग्रवाल एमवीजी

लेखिका ने सभ्यता और उसकी धारणाओं के बारे में किताबें और कहानियां लिखी हैं, जिनमें प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'रीसरेक्टिंग दुर्बल इंडियन आर्ट फॉर्म्स' भी शामिल है।
ईमेल: mannu74vivek@gmail.com

किसी भी रूप में कला मानव मस्तिष्क की सृजन क्षमता की अभिव्यक्ति है। क्षमता अंतर्निहित हो सकती है, लेकिन यह हर इंसान में मौजूद है... जीवन की ऊर्जा की शक्ति और जीवंतता के रूप में छिपी हुई है। कलात्मक परंपराएं बदलती रही हैं और बदलती रहेंगी क्योंकि रचनात्मकता निरंतर विकसित होने वाली घटना है। डिजिटल रूप से बढ़ती तकनीक इसकी यात्रा को मानव जाति के साथ समन्वयित रखने में सहायक रही है।

कि सी भी सभ्यता की कलात्मक परंपराएं उसके सांस्कृतिक ढांचे का निर्माण करती हैं। इसकी प्रगतिशील यात्रा विभिन्न कलाओं और उनके उत्कृष्ट रूपों द्वारा प्रदान की गई एक रूपरेखा के साथ बनाई गई है, एक ऐसा तथ्य जो बहुविविधता से जुड़े होने पर भी आज के डिजिटल युग में भी नहीं बदला है। आज की पीढ़ी ने बहुआयामी समीकरणों पर विचार-विमर्श शुरू कर दिया है और संभवतः उन्हें हमारी कलात्मक परंपराओं को प्रौद्योगिकी के साथ विलय का रास्ता खोजे बिना संतुष्ट नहीं किया जा सकता है।

सहस्राब्दियों से जो कुछ भी हमारे साथ चला वह आज हमारी सांस्कृतिक संस्था बन गया है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य के दृष्टिकोण से बात करते हुए, - क्षणिक को त्यागकर, हमारी यात्रा के हर पड़ाव पर शाश्वत का आह्वान करते हुए हमने सर्वोत्कृष्टता को बरकरार रखा है और अब हम एक और दहलीज के कगार पर हैं, वह है डिजिटल युग। हमारी उत्कृष्ट सांस्कृतिक/कलात्मक परंपराओं के संरक्षण, विस्तार और उत्थान के लिए हमारा दृष्टिकोण क्या हो सकता है? इसका उत्तर शायद हमारे

कला रूपों को आज की भविष्यवादी दुनिया - डिजिटल दुनिया - से जोड़ना है।

डिजिटल इंटरफ़ेस के माध्यम से विभिन्न कलाप्रवीण तकनीकों को जोड़ने का क्रांतिकारी विचार पहले से ही कई क्षेत्रों में कई कलाकारों द्वारा तेजी से अपनाया जा रहा है। इनमें मूर्तिकार, कलाकार, चित्रकार, लेखक, डिज़ाइनर, कांच और मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कारीगर, बुनकर, वास्तुकार और बहुत कुछ शामिल हैं। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और कंप्यूटर कोड का उपयोग करके डिजिटल कलाकार विशिष्ट डिज़ाइन टैबलेट के माध्यम से अपनी अनूठी कला-कृतियां बनाने में सक्षम हैं। इसने - डिज़ाइन नवाचार, बढ़ी हुई पहुंच, काम करने की सुविधा, त्वरित साझाकरण, उत्पादकता में वृद्धि, व्यापक पहुंच और कई अन्य लोगों के बीच मान्यता प्राप्त की है तथा उनके पुरस्कारों को कई गुना बढ़ा दिया है।

कला का डिजिटलीकरण कलाकार को अत्यधिक विविधता और सहजता प्रदान करता है। विजुअलाइज़ेशन के साथ प्रयोग विभिन्न विषयों के मिश्रण को सक्षम बनाता है, अद्वितीय और





डिजिटल इंटरफ़ेस के माध्यम से विभिन्न कलाप्रवीण तकनीकों को जोड़ने का क्रांतिकारी विचार पहले से ही कई क्षेत्रों में कई कलाकारों द्वारा तेजी से अपनाया जा रहा है। इनमें मूर्तिकार, कलाकार, चित्रकार, लेखक, डिज़ाइनर, कांच और मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कारीगर, बुनकर, वास्तुकार और बहुत कुछ शामिल हैं।

कल्पनाशील परिणाम प्राप्त करने के लिए घटकों के साथ अन्वेषण के विविध स्तर प्रदान करता है। इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया तत्वों, इंस्टॉलेशन और 2 डी (2 आयामी), 3 डी या 4 आयामी अनुमानों के साथ-साथ आभासी वास्तविकता (वर्चुअल) (वीयू) या संवर्धित वास्तविकता (एयू) जैसी अत्याधुनिक अवधारणाओं के माध्यम से प्रौद्योगिकी की मदद से कला की उत्कृष्ट कृतियों को बनाने और लोकप्रिय बनाने की अथाह गुंजाइश होती है।

कलात्मक परंपराएं बदलती रही हैं और बदलती रहेंगी क्योंकि रचनात्मकता निरंतर विकसित होने वाली घटना है। क्योंकि जब तक ये समय के साथ विकसित नहीं होंगी, वे समाप्ति की ओर बढ़ सकती हैं। डिजिटल एन्हांसमेंट तकनीक इनकी यात्रा को मानव जाति के साथ समन्वयित रखने में सहायक रही है, और इस तथ्य को शायद ही कोई अस्वीकार कर सकता है। फिर भी यहां की परंपराओं के प्रति समर्पित प्रेमियों के लिए यह चिंता का विषय है।

एक पारंपरिक कला रूप प्रामाणिकता और शिल्प कौशल का प्रतीक है जो सदियों से पूजनीय रहा है। एक शिल्पकार द्वारा इसमें डाला गया कौशल, समर्पण और व्यक्तित्व का तत्व और मानवीय स्पर्श या मानवीय हाथ से उत्पन्न होने वाली खामियां और सूक्ष्मताएं कालातीतता की भावना पैदा करती हैं। इस तरह की घटना का सौंदर्यशास्त्र क्षेत्रीय सीमाओं और सदियों के समय के दायरे को पार करते हुए, युगों-युगों तक मानव हृदय में गूंजता

रहता है। मानव सृजन का यह कभी न मरने वाला सार है, जो उभरने की तैयारी कर रही पीढ़ियों में नया जीवन फूंकता है।

इलेक्ट्रॉनिक कलात्मकता के लिए मशीन-निर्मित उपकरणों को स्वीकार करना इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा हमेशा स्वागत योग्य नहीं होता है। कारण कई अलग-अलग हो सकते हैं - सदियों पुरानी मान्यताएं, पारंपरिक स्वभाव, ज्ञान या तकनीकी जानकारी की कमी या क्षेत्र की अवधि या शिक्षा से संबंधित अन्य बाधाएं। लेकिन उनके अपने आप में एक संस्था होने के बारे में शायद ही कोई संदेह हो सकता है - उन्मत्त शहरों से दूर, दुनिया के किसी शांतिपूर्ण कोने में बसे वे हमारे कुछ अमूल्य कला रूपों के अमूल्य संरक्षक हैं। बिना किसी संदेह के, वे ऐसा करना जारी रखेंगे, चाहे तकनीक उनसे कितनी भी आगे क्यों न बढ़ जाए।

इसलिए मानव के हाथ से प्रौद्योगिकी के छीनने का कोई सवाल ही नहीं है। लेकिन उपलब्ध समर्थन को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है और न ही किया जाना चाहिए। कलात्मक कल्पना के साथ प्रौद्योगिकी का विलय एक स्पर्शनीय और भावनात्मक पहलू हो सकता है जिसे निश्चित रूप से और अधिक खोजा जा सकता है।

इसके बाद, जब कला रूपों के प्रदर्शन की बात आती है तो जांच की जाने वाली एक और परत होती है। प्रदर्शन कलाओं की मूर्तता सदैव विशिष्ट है और रहेगी। प्रदर्शन की





महारथ जो भौतिक रूप से प्रदर्शित होती है, दर्शकों द्वारा उतनी ही खूबसूरती से आत्मसात की जाती है - जैसे कि साकार से परे एक उदात्त क्रिया। इस प्रभाव को सांसारिक, भौतिक जुड़ाव के माध्यम से बढ़ाया जाता है जिससे कलाकार दर्शकों के साथ स्थापित करने में सक्षम होता है। यहां डिजिटलीकरण बाहरी भूमिका से परे अनुपयुक्त लगता है परंतु उनके प्रतिस्पर्धात्मक रूप से बने रहने के लिए अपेक्षित प्रचार उपकरण प्रदान करता है।

इस संदर्भ में, इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी की सहायक भूमिका की बात करते हुए, कोई भी, एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु को छोड़ नहीं सकता है। इंटरनेट न केवल प्रदर्शन के लिए बेहतर पहुंच और जागरूकता पैदा करने के लिए कई रास्ते प्रदान करता है, बल्कि यह हमें कला-कलाकार-दर्शक तिकड़ी को करीब लाने के लिए उच्च तकनीक उपकरण भी प्रदान करता है। सोशल मीडिया और अन्य साइबर प्लेटफार्मों के माध्यम से कलात्मक प्रदर्शन को लोकप्रिय बनाने में मदद करके डिजिटल दुनिया ढेर सारे अभियान पेश करती है जो बड़ी हुई रुचि और बेहतर प्रतिक्रिया पैदा करने में मदद कर सकते हैं। यह सिर्फ कलाकारों या दर्शकों के लिए एक विकल्प नहीं है, बल्कि यह बड़े पैमाने पर किसी भी कलात्मक-समाज की अपरिहार्य आवश्यकता के रूप में उभरा है।

प्रदर्शन कला रूपों को बढ़ावा देने में डिजिटल मीडिया की भूमिका काफी चमत्कारी रही है। समर्पित डिजिटल मीडिया अभियानों के माध्यम से बहुत सारे डर्बल या मरते हुए कला रूपों में पुनरुत्थान को देखा गया है। लंबे समय से खोए हुए कई

कलाकार सोशल मीडिया नेटवर्क के माध्यम से खोज करने वाले प्रतिबद्ध अनुयायियों के उत्साही प्रयासों से गुमनामी से फिर से उभरे हैं। बहुत सारी सोई हुई कला-तकनीकों को उत्साही लोगों द्वारा पुनर्जीवित किया गया है जो 'इसे हमेशा के लिए खो जाने देने' के लिए तैयार नहीं हैं। जिस विरासत को हम खो सकते थे, कभी दोबारा हासिल नहीं कर सकते थे, उसे निश्चित रूप से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की राहत देने वाली शाखा के माध्यम से बहाल कर दिया गया है।

निस्संदेह, व्यापक मानव कनेक्टिविटी प्राप्त करने के ऐसे शानदार वरदान हैं जो डिजिटल दुनिया द्वारा प्रदान किए जा रहे हैं।

अब प्रति-प्रभावों पर एक त्वरित नज़र, तकनीकी प्रगति ने कुछ एलकेमिस्ट को इस माध्यम से विवादास्पद और अकलात्मक मुद्दों पर अपने बयान देने की अनुमति भी दे दी है। ऐसा किसी फ़िल्टर के अभाव के कारण हो रहा है जो कलात्मक शैली के साथ गैर-कलात्मक प्रयोग को रोक सकता है। यहां कोई भी दृढ़ता से यह महसूस नहीं कर सकता है कि डिजिटल प्रौद्योगिकी की उत्पादक भूमिका होने की बजाय सहायक भूमिका निर्दिष्ट करने की आवश्यकता है।

इस प्रकार संकेतों को समझते हुए, एक मिश्रित दृष्टिकोण रखना ही समाधान नजर आता है जिसमें मानव रचनात्मकता अपने मूल स्थान पर अपरिवर्तनीय रूप से बनी रहती है, जबकि इसके बढ़ते प्रभावों को डिजिटल कामकाज के माध्यम से प्रोत्साहित (सम्पलिकेट) किया जा सकता है।

डिजिटलीकरण के प्रभावों का उपयोग संवर्धन के लिए किया जाना चाहिए, सृजन के लिए नहीं। □